2 फरवरी 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जीवन संध्या के पूर्व हमें भगवान आत्मा की प्राप्ति होना ही चाहिए ह्न ऐसा दृढ़संकल्प प्रत्येक आत्मार्थी का होना चाहिए; तभी कुछ हो सकता है। ह्न आत्मा ही है शरण, पृष्ठ :161

वर्ष : 29, अंक : 21 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (प्रथम), 07 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

छहढ़ाला शिक्षण-शिविर एवं विधान सम्पन्न

अशोकनगर (म.प्र.) : श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में दिनांक 19 से 25 जनवरी 2007 तक छहढ़ाला शिक्षण-शिविर एवं बीस तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के दशम वार्षिकोत्सव समारोह के अन्तर्गत अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन अशोकनगर द्वारा सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन श्री सुरेशचन्द पद्मकुमार जैन (विजय किराणा स्टोर) एवं ध्वजारोहण श्री मदनलालजी पालीवाल के करकमलों से हुआ।

प्रतिदिन दोनों समय के तीन प्रवचनों में क्रमश: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. जयकुमारजी मुजफ्फरनगर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई एवं आगन्तुक विद्वानों से समाज लाभान्वित हुआ।

पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, पण्डित सतीशजी पिपरई एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा अपराह्न छहढ़ाला की कक्षाएँ ली गई।

शिविर के अन्तिम तीन दिन **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के दोनों समय के प्रवचन विशेष आर्कषण का केन्द्र रहे। स्थानाभाव होने के कारण आपके प्रवचनों के लिए विशेष पाण्डाल बनाया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा कराये गए।

अन्तिम दिन शोभायात्रा एवं सामूहिक भोज का आयोजन किया गया।

यह शिविर पूर्व में चन्देरी (म.प्र.) में आयोजित किया जाना निश्चित था; किन्तु अपरिहार्य कारणों से स्थान परिवर्तन कर अशोकनगर में लगाया गया। **ह्न अखिल बंसल**

सिद्धचक्र विधान एवं शिविर सम्पन्न

मन्दसौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में श्री शैतानमलजी चांदमलजी कियावत द्वारा दिनांक 22 से 29 दिसम्बर 2006 तक श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, डॉ.महावीरप्रसादजी टोकर, पं. शान्तिलालजी सोगानी महिदपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में विधानाचार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित विवेकजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित कांतिलालजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर मन्दसौर मुमुक्षु मण्डल द्वारा श्री शैतानमलजी का सम्मान किया गया। ज्ञातव्य है कि समारोह में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर को सत्साहित्य की कींमत कम करने के हेतु 30,000/- रुपये की राशि प्रदान की गई। **ह्न खूबचन्द मोदी**

कुन्दकुन्दधाम में गूँजी आचार्य कुन्दकुन्द की वाणी

पोन्नूरहिल (तमिलनाडू) : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र में दिनांक 23 से 25 दिसम्बर 2006 तक त्रिदिवसीय आध्यात्मिक शिविर का आयोजन किया गया; जिसमें श्री अरहंतगिरि मठ के भट्टारक श्री धवलकीर्ति स्वामीजी की प्रेरणा से नेमिनाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय के बालकों एवं विभिन्न स्थानों से पधारे मुमुक्षुओं ने धर्मलाभ लिया।

शिविर में श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित जम्बूकुमारनजी शास्त्री, पण्डित उमापतिजी शास्त्री, पण्डित इलंगोवनजी शास्त्री, पण्डित जयराजनजी शास्त्री,पण्डित नाभिराजनजी शास्त्री एवं पण्डित पदमकुमारजी शास्त्री द्वारा तमिल भाषा में बालबोध पाठमाला व वीतराग-विज्ञान पाठमाला के माध्यम से तत्त्वज्ञान की धारा प्रवाहित की गई।

शिविर के उद्घाटन अवसर पर श्रीमती शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा लिखित जैन के.जी. के चारों भागों के तमिल अनुवाद का विमोचन हुआ। सम्पूर्ण कृति एवं गीतों का तमिल अनुवाद पं. जम्बूकुमारनजी शास्त्री ने किया।

शिविर के अन्तिम दिन तमिल में रत्नत्रय विधान का आयोजन हुआ व उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को पुरस्कार वितरित किये गये।

विधान का आयोजन श्री बांकेबिहारीजी मिश्रा ने किया। संस्था के न्यासी श्री वी.सी. श्रीपालन एवं सी.एस.पी.जैन के मार्गदर्शन में श्री राजीव जैन, कृष्णकुमार जैन एवं सुश्री सुमति जैन ने शिविर का संचालन किया। **ह्न उमापति जैन**

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

२१. करनी का फल तो भोगना ही होगा

एक दिन वह था, जब धनेश साधारण–सी शारीरिक पीड़ा को इतना अधिक तूल देता था, जिससे सारा घर परेशान हो जाता था। माथे में, पेट में, पीठ में, कहीं भी जरा–सी भी पीड़ा क्यों न हो जाए, हाथ–पैर–कमर आदि शरीर के किसी भी अंग में किसी भी प्रकार का किंचित् भी कष्ट क्यों न हो जाए, वह पूरे घर का खाना और सोना हराम कर देता था, पूरे मोहल्ले में हलचल मचा देता था, जमीन–आसमान एक कर देता था।

चीख–चीख कर कहता ह्न ''मैं सिर दर्द के कारण मरा जा रहा हूँ, पेट दर्द से मेरा बुरा हाल हो रहा है, सांस लेने में मेरे प्राण–से निकलते हैं; क्या करूँ ? कुछ समझ में नहीं आता; तुम्हें कैसे बताऊँ कि मुझे कितना भारी दर्द है। सारा शरीर ऐसा भनभना रहा है, मानो सौ–सौ बिच्छुओं ने एक साथ काट लिया हो।''

यद्यपि उसे कभी भी बिच्छू ने काटा नहीं था, जिससे सौ–सौ बिच्छुओं के काटने के दर्द की तुलना करता; पर अपनी पीड़ा को व्यक्त करने का उसके पास अन्य कोई उपाय भी तो नहीं था।

उसे पीड़ा से उतनी परेशानी नहीं थी, जितनी पीड़ा के भय से। पीड़ा का भय उसे अधिक परेशान करता था। मानवीय मनोविज्ञान के मुताबिक उसे धीरे–धीरे मन में अनुभव भी वैसा ही होने लगा था। जिस तरह बालक इन्जेक्शन लगने के पहले ही जोर–जोर से रोने लगता है; जबकि अभी उसे सुई चुभने का दर्द नहीं हुआ, परन्तु वह उसके भय से भयभीत है।

वह कहता ह्न''मुझसे दर्द सहा नहीं जा रहा है। जो भी उपाय करना हो, जल्दी करो। रामू कहाँ मर गया ? उससे कहो वैद्य को बुलाकर लाये, डॉक्टरों को भी फटाफट फोन कर दो, मन्त्र–तन्त्र वाले पण्डित को भी खबर तो कर ही दो, झाड़ने–फूँकने वाले को भी बुला लो। सबको अपने–अपने तजुर्बों का प्रयोग करने दो।''

माँ आश्चर्य मुद्रा में कहती ह्न ''सबको एकसाथ !''

धनेश कहता ह्न ''हाँ–हाँ, सबको एक ही साथ।....सबको एकसाथ बुलाने में अपना हर्ज ही क्या है ? फीस ही तो लगेगी। जबतक डॉक्टर लोग नहीं आ पाते, तबतक दादी अपने नुस्खे ही आजमा कर देख ले।''

सहानुभूति दिखाते हुए स्नेहवश पत्नी पैर दबाने लगती, माँ माथे पर हाथ फेरने लगती, दादा–दादी देवी–देवताओं से मनोतियाँ मनाने लगते, पिताजी परमात्मा से प्रार्थना करने लगते। डॉक्टरों को फोन कर दिये जाते, वैद्य बुलाने की व्यवस्था हो जाती; परन्तु दु:ख तो पाप का फल है, वह तो स्वयं ही भुगतना पड़ता है।

जिसे खाने–पीने में भक्ष्य–अभक्ष्य का कोई विवेक नहीं, व्यापार में न्याय–नीति नहीं, धर्नाजन में साधन–शुद्धि की परवाह नहीं ;'' उसे इन पापों का फल भुगतना तो पड़ेगा ही, चाहे हंसकर भोगे या रोकर।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि ह्न **रो–रो कर भुगतने से अति संक्लेश भाव होते हैं। उन भावों से पुन: पाप का बन्ध होता है, धनेश को इस बात का ज्ञान नहीं था।**

एक दिन पड़ौसी ने बड़ी उत्सुकता से चैकअप करने आये एक बड़े डॉक्टर से पूछा ह्न'डॉक्टर साहब ! आये दिन क्या हो जाता है धनेश को, जो आपको रोज–रोज टाइम–बे–टाइम कष्ट उठाना पड़ता है ?

डॉक्टर का उत्तर था ह्न ''अरे भाई ! फिलहाल बीमारी कुछ खास नहीं है, ओवरड्रिंकिंग और ओवरडाइट के कारण गैसेस ट्रबल हो जाती है, उससे कभी सिरदर्द हो जाता है, कभी पेट में पीड़ा होने लगती है। कभी सीने में दर्द होने लगता है। पेट तो आखिर पेट ही है, जिसे पेट की परवाह नहीं, जिसे जीभ पर कंट्रोल नहीं, उसका तो आये दिन यही हाल होना है। कारण एक है, बीमारियाँ अनेक दिखतीं हैं। उन्हें यह सब बता दिया है, फिर भी आये दिन बिना वजह अनेक डॉक्टरों की भीड़ इकट्ठी कर लेते हैं। कौन समझाये इनको ? डॉक्टरों को क्या ? उनका तो धंधा है। फीस मिलती है सो दौड़े चले आते हैं।''

डॉक्टर ने आगे कहा ह्न ''मैंने तो साफ–साफ कह दिया ह्न इस काम के लिए भविष्य में आप मुझे कभी फोन न करें। ये क्या खिलवाड़ है ? एक ओर बड़े–बड़े डॉक्टरों की लाइन लग रही है, दूसरी ओर वैद्य, हकीम, जंत्र–तंत्र–मंत्र और गण्डा ताबीज वाले, पण्डा–पुजारी सब एक साथ बिठा रखे हैं। बड़े आदमी के मायने यह तो नहीं कि चाहे जिसको लाइन में लगा दे। हर एक के अपने कुछ सिद्धान्त होते हैं, पैसा ही तो सब कुछ नहीं है।

और भी जिन चिकित्सकों में जरा भी स्वाभिमान था, उन्होंने भी आना बन्द कर दिया। धीरे–धीरे मुहल्ले के लोग भी समझने लगे कि ''धनेश के यहाँ भीड़–भाड़ का कारण और कुछ नहीं, उसे दो–चार छींके आ गईं होंगी।''

ज्ञानेश के सत्संग से हुए परिवर्तन के पूर्व यह इमेज थी धनेश की।

वही धनेश जब से ज्ञानेश के अन्तर–बाह्य व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ, उसके सान्निध्य में रहकर स्वाध्याय और सत्संग करने लगा, तब से उसका जीवन ही बदल गया।

अब मरणतुल्य पीड़ा में भी वह मुँह से उफ तक नहीं निकालता। पास के पलंग पर सो रही अपनी पत्नी धनश्री को भी नहीं जगाता। जगाना तो बहुत दूर, उसे अपनी असह्य पीड़ा का पता तक नहीं चलने देता। अब उसकी बैचेनी को वह स्वयं जानता था या भगवान जानते थे। कहाँ से आ गई अनायास यह सहनशक्ति उसमें ? कैसे हुआ इतना भारी परिवर्तन ?

जब सारा शहर गहरी नींद में सो रहा होता, सड़कें सुनसान हो जातीं, सिपाहियों की सीटियों के सिवाय कहीं/कोई आवाज सुनाई नहीं देती, तब

बीमार व्यक्तियों की दु:ख–दर्द भरी कराहने की आवाजें सम्पूर्ण वातावरण को करुण रस से भर देती हैं। अस्थमा से पीड़ित धनेश रात–भर सो नहीं पाता, तथापि अब वह किसी को डिस्टर्ब नहीं करता था, यद्यपि धनश्री देर रात तक जागकर पति के दु:ख में सहभागिनी बनने का पूरा–पूरा प्रयत्न करती, परन्तु शरीर तो आखिर शरीर ही है, जब वह थककर चूर–चूर हो जाती तो न चाहते हुए भी बैठे–बैठे ही उसे नींद आ ही जाती थी।

धनेश अब धनश्री को थोड़ा भी कष्ट नहीं देना चाहता था, अत: धनश्री के सो जाने पर वह उसे जगाता नहीं; पर धनेश के पीड़ा की कराहें कच्ची नींद में सोई धनश्री के कानों में टकराने से, उसकी दु:खभरी आहों और कराहों से वह स्वयं ही चौंक पड़ती। आँख खोलकर जब भी देखती तो धनेश को तड़पता ही पाती।

कुछ गिरने के धमाके से जब धनश्री की नींद खुली और उसने उठकर देखा तो पानी का लोटा नीचे पड़ा था, पानी पलंग पर फैल गया था और धनेश पलंग पर औंधे मुँह पड़ा प्यास से तड़फ रहा था। वह सांस लेने में भी भारी कठिनाई अनुभव कर रहा था। घड़ी की ओर देखा तो उस समय तीन बज रहे थे।

धनश्री ने धनेश की पीठ सहलाते हुए पूछा ह्न तबियत कैसी है, क्या अभी तक बिल्कुल भी नींद नहीं आई ? जब नींद नहीं आ रही थी, बेचैनी बढ़ रही थी तो ऐसी स्थिति में उठे ही क्यों ? मुझे क्यों नहीं जगा दिया ?

धनेश ने कहा ह्न ''मैंने यह सोच कर तुम्हें नहीं जगाया कि तुम्हारें जागने से मेरी पीड़ा तो कम होगी नहीं। वह तो मुझे ही सहनी पड़ेगी; फिर तुम्हें व्यर्थ परेशान क्यों करूँ ? कोई एक–दो दिन की बात तो है नहीं, तुम रात–रात भर जागकर कब तक कितना साथ दे सकोगी ? फिर तुम्हें दिन भर घर–बाहर का सब काम–काज भी तो करना पड़ता है। तुम्हारा शरीर भी कोई फौलाद का बना नहीं है। धनश्री ! मैंने तुम्हें जीवन में दु:ख के सिवाय और दिया ही क्या है ?'' कहते–कहते धनेश की आँखो में आसूँ छलक आये।

धनश्री ने कहा ह्न ''आप पुरानी बातों को याद करके ये कैसी बातें करते हो ? याद है उस दिन ज्ञानेशजी ने क्या कहा था ? उन्होंने कहा था कि ह्न **जिसका करना चाहिए हमें स्मरण, हम उसका करते हैं विस्मरण; और जिसका करना चाहिए हमें विस्मरण, हम उसका करते हैं स्मरण; इसी कारण तो होता है संसार में परिभ्रमण।**

सचमुच भूतकाल तो भूलने जैसा ही है; उसे याद करने से पश्चात्ताप और दु:ख के सिवाय कुछ नहीं मिलता ? भूतकाल तो भगवान का भी भूलों से ही भरा था। हम–तुम तो चीज ही क्या हैं उनके सामने ? अत: भूतकाल में हुई भूलों के लिए रोना–धोना व्यर्थ ही है।

ज्ञानेशजी के प्रवचन में दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह भी आई थी कि कोई अन्य व्यक्ति किसी को सुख–दुख का दाता है ही नहीं, अपना अज्ञान व राग–द्वेष से बांधे हुए पापकर्म ही अपने–अपने दु:ख के विधाता हैं। अत: किसी अन्य को दोष देना व्यर्थ है।''

धनश्री की अमृत तुल्य ज्ञान की बातें सुनकर धनेश को ऐसा लगा मानो उसके हरे–भरे घावों पर किसी ने मरहम लगा दी हो। उसे थोड़ी देर के लिए अतीन्द्रिय आनन्दसी अनुभूति हुई; फिर उसे अचानक ख्याल आया कि अभी रात के तीन बजे हैं, अत: धनश्री को सो जाना चाहिए।

धनेश ने स्नेह भरे स्वर में कहा ह्न''धनश्री ! तुम सो जाओ। मुझे मेरे हालातों पर छोड़ दो। मेरे पीछे तुम अपना स्वास्थ्य मत बिगाड़ो। अब तुम मेरे बजाय मेरे बेटे की देखभाल पर ध्यान दो। तुम्हारे सिवाय अब उसका है ही कौन ? मेरे जीवन का तो कोई भरोसा नहीं है।

मेरी बुरी आदतों से यह शरीर तो बीमारियों का ही अड्डा बन गया है। सचमुच यदि ज्ञानेशजी का सान्निध्य नहीं मिला होता और आत्मा के स्वभाव का बल नही होता तो संभवत: मैं इस पीड़ा से बचने के लिए जहर खाकर कभी का चिरनिद्रा में सो गया होता।''

धनेश की बातें सुनकर धनश्री की आँखों में आँसू आ गये। आँसू पोंछती हुई बोली ह्न ''स्वामी ! आप अपने मुँह पर मौत की बात लाते ही क्यों हो ? ऐसा अशुभ सोचते ही क्यों हो ? अभी आपकी उम्र ही क्या है ? यह पाप का उदय भी चला जायेगा। मुझे विश्वास है कि आप शीघ्र स्वस्थ हो जायेंगे।''

धनेश ने कहा ह्न''यह तुम नहीं, तुम्हारा राग बोल रहा है। ठीक है, तुम्हारी भावना सफल हो। यदि मुझे जीने की तमन्ना नहीं है तो मरने की जल्दी भी नहीं है। जबतक ज्ञानेश के सत्संग से यह आत्मकल्याणकारी धर्म की बात सुनने–समझने एवं तत्त्वचिन्तन–मंथन करने का मौका मिल रहा है तो अच्छा ही है; पर हमारे–तुम्हारे सोच के अनुसार कुछ नहीं होता। **जो होना है, वह निश्चित है** ह्न अब मुझे इस पर पूर्ण आस्था हो गई है। पर इतना मैंने पक्का निश्चय कर लिया है कि अब मैं अपना शेष जीवन ज्ञानेश के सान्निध्य में ही बिताऊँगा। आज से वह मेरा मित्र ही नहीं, गुरु भी है।''

बात करते–करते धनेश को फिर दमा का दौरा पड़ गया और वह छाती दबा कर वहीं बैठ गया। बैठे–बैठे सोचने लगा ह्न **करनी का फल तो भोगना ही पड़ेगा, पलायन करने से काम नहीं चलेगा। जब कुत्ते के कान में कीड़े पड़ जाते हैं और वे काटते हैं तो वह कान फड़फड़ाता हुआ इधर से उधर, उधर से इधर भागता फिरता है, अंधेरे में जाकर बैठता है। वह समझता होगा कि अंधेरे में कीड़ों के काटने से बच जाऊँगा। उस बेचारे को यह पता ही नहीं कि दु:ख का कारण बाहर नहीं, मेरे कान के अन्दर ही विद्यमान है।** यही स्थिति हम सबकी है।

कर्म के कीड़े तो हमारे ही अन्दर हैं ? इधर–उधर भागने से क्या होगा ? कर्म तो पीछा छोड़ेंगे नहीं ? अज्ञान दशा में जो भी बाहर के उपाय हम करते हैं, वे सब झूठे ही हैं। (क्रमश:)

श्री आदिनाथाय नमः ! !! श्री ने

राजस्थान के सिंहद्वार व अरावली पर्वतमालाओं के अंचल में ब

''अलवर'' नगरी में नवविकसित चेतन एन्क्लेव

श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द स्मृति

श्री १००८ नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब

(गुरुवार, दिनांक 15 फरवरी से बुधव

महोत्सव स्थल : शौरीपुर नगरी, जैन नसिय

नवनिर्मित श्री रत्नत्रय दिग. जिनमंदिर, अलवर (राज.)

प्रतिष्ठाचार्य एवं निर्देशक

बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद

सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य

ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथा
पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर
पण्डित मधुकरजी जैन, जलगाँव
पण्डित ऋषभजी शास्त्री, छिंदवाड़ा
पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, बांसवाड़ा
पण्डित सुबोधजी शास्त्री, शाहगढ़

निवेदक : सकल जैन समाज एवं श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जि

अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री	स्वागता
रतनलाल जैन	**सुभाषचन्द्र अग्रवाल**	**नीरज जैन,** अरिहंत पब्लिसिटी	**रतनलाल**
वंदना प्रकाशन - 9414893111	94140 20511	9413303464	अशोका रेडिमेड-9

उपाध्यक्ष
चन्द्रसेन जैन, रमेशचन्द जैन
जयकुमार जैन, नरेश जैन, पवन जैन

सम्पर्क–सूत्र : श्री रत्नत्रय दिग. जिनमंदिर, चेतन

फोन : 0144–290505

मिनाथाय नम: !! श्री महावीराय नम: !!

से अन्तिम अनुबद्ध केवली जम्बूस्वामी की तप एवं विहार स्थली
कॉलोनी के श्री रत्नत्रय दिगम्बर जिनमन्दिर हेतु
ट्रस्ट, अलवर के तत्त्वावधान में

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

वार, दिनांक 21 फरवरी, 2007 तक)

ाँ, करौली कुण्ड के पास, अलवर (राज.)

❖ मांगलिक कार्यक्रम ❖

गुरुवार, 15 फरवरी – धर्मध्वजारोहण
शुक्रवार, 16 फरवरी – गर्भकल्याणक के छः माह पूर्व
शनिवार, 17 फरवरी – गर्भकल्याणक
रविवार, 18 फरवरी – जन्मकल्याणक
सोमवार, 19 फरवरी – दीक्षाकल्याणक
मंगलवार, 20 फरवरी – केवलज्ञानकल्याणक
बुधवार, 21 फरवरी – मोक्षकल्याणक

❖ विद्वत्समागम ❖

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी
पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर
ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, खनियांधाना
ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना
पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली
पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, मंगलायतन
पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री, जयपुर
पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर

नबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, **अलवर (राज.)**

ध्यक्ष
न जैन
9413689560

कोषाध्यक्ष
राजेन्द्र जैन 'कहान'– 9214103102
आशीष जैन–9829096237

मंत्री
पदमचन्द जैन 'हैप्पी',
जिनेशचन्द जैन, जिनेन्द्र जैन

संयोजक
अनन्तकुमार जैन
9414366912

प्रचार मंत्री
अजय जैन बड़जात्या
9414020090

न एन्क्लेव फेज–2, जयपुर रोड, अलवर **(राज.)**
52, **मो.**09887006339

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 68

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

आत्मा में नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव नामक धर्म हैं और इन नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव नामक धर्मों को विषय बनानेवाले नयों को क्रमश: नामनय, स्थापनानय, द्रव्यनय और भावनय कहा जाता है।

नामकरण संबंधी समस्त व्यवहार नामनिक्षेप या नामनय से होता है और ये पंचकल्याणक महोत्सव आदि सब स्थापना निक्षेप से होते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि 'मूर्तियाँ नहीं बनानी चाहिए; क्योंकि मुसलमान तोड़ देते हैं। अरे भाई ! यह तो तात्कालिक बात थी; किन्तु वस्तुव्यवस्था तो त्रैकालिक है। संकट के काल में यदि किसी ने हमारा मकान तोड़ दिया, तो हम यह थोड़े ही कहेंगे कि मकान नहीं बनाना चाहिए अर्थात् बिना मकान के रहना चाहिए। कल कोई यदि हमारे कपड़े छीन लेगा तो फिर हम यह थोड़े ही कहेंगे कि कपड़े नहीं पहनना चाहिए; क्योंकि यदि हम कपड़े पहनेंगे तो लोग छीनेंगे।

आत्मा को भूत और भावी पर्यायों सहित जानना द्रव्यनय है और वर्तमान पर्यायसहित जानना भावनय है। सेठ के बालक को भविष्य में सेठ ही बनना है; इसकारण उसे वर्तमान में भी सेठ कहना द्रव्यनय का काम है और पूजन करते हुए मुनीम को भी पुजारी कहना भावनय का काम है। इसप्रकार के व्यवहार लोक और शास्त्रों में भी सर्वत्र देखे जा सकते हैं। इसप्रकार नामनय, स्थापनानय, द्रव्यनय और भावनय ह्न ये चार निक्षेपसंबंधी नय हैं।

तदनन्तर सामान्यनय और विशेषनय का स्वरूप आचार्यदेव इसप्रकार बतलाते हैं ह्न

''**सामान्यनयेन हारस्रग्दामसूत्रद्वयापि, विशेषनयेन तदेकमुक्ता फलवदव्यापि।** ह्न आत्मद्रव्य सामान्यनय से हार-माला-कंठी के डोरे की भाँति व्यापक है और विशेषनय से उसके एक मोती की भाँति अव्यापक हैं।''

यहाँ आचार्यदेव ने सामान्यनय और विशेषनय को समझाने के लिए हार को उदाहरण बनाया है। हार मात्र डोरा और मोती का नाम नहीं है। ये दोनों तो उसमें हैं ही; लेकिन हार में दोनों का एक विशेष अवस्था में गुथा होना भी शामिल है। मोती यदि अलग रखे हो तथा डोरा अलग जगह रखा हो, तो उन्हें हम हार नहीं कह सकते। डोरे में व्यवस्थितरूप से मोतियों के गुथे होने का नाम हार है।

अब यदि उस हार को डोरा की तरफ से देखा जाय, तो हर मोती में डोरा है, इसलिये अखण्ड है; किन्तु यदि डोरा की ओर न देखकर एक-एक मोती की ओर देखा जाय तो मोती जुदे-जुदे हैं। सामान्यनय से हार एक है और विशेषनय से अनेक। वस्तु में ये दोनों ही बातें एकसाथ हैं। हम जिस धर्म की ओर देखेंगे, हमें वही धर्म दिखाई देगा तथा जिसकी ओर नहीं देखेंगे, वह धर्म दिखाई नहीं देगा।

इसप्रकार जिस दृष्टि से वस्तु को देखा जाय; वस्तु वैसी ही दिखती है। 'एक को गौण करके एक को देखना' यह आत्मा की विशेषता है, दोष नहीं। हम वस्तु को जिस धर्म की ओर से देखेंगे, हमें वह वस्तु उसी धर्ममय दिखाई देगी और जिसकी ओर से उसे नहीं देखेंगे, उस धर्ममय नहीं दिखाई देगी।

इसप्रकार आत्मद्रव्य सामान्यनय से हार-माला-कंठी के डोरे की भाँति व्यापक है और विशेषनय से उसके एक मोती की भाँति अव्यापक है।

इसके बाद आचार्यदेव ने सर्वगतनय और असर्वगतनय की चर्चा की है। आत्मा सबको जानता है, इस दृष्टि से आत्मा सर्वगत है और सभी पदार्थों में जाता नहीं है तथा पदार्थ उसमें आते नहीं हैं, इसलिये वही आत्मा असर्वगत है।

यहाँ पर सर्वगतनय और असर्वगतनय, शून्यनय और अशून्यनय, ज्ञानज्ञेय-अद्वैतनय और ज्ञानज्ञेय-द्वैतनय - ये तीन जोड़े हैं।

समयसार में आचार्यदेव ने 47 शक्तियों में पहले दृशिशक्ति और ज्ञानशक्ति को कहने के बाद फिर सर्वदर्शित्वशक्ति और सर्वज्ञत्वशक्ति को भी कहा; क्योंकि ज्ञानशक्ति में तो यह बताया था कि जानना आत्मा का स्वभाव है; फिर सर्वज्ञत्वशक्ति में यह बताया कि सबको जानना आत्मा का स्वभाव है। इसीप्रकार दृशिशक्ति और सर्वदर्शित्वशक्ति के संबंध में भी समझना चाहिए।

इसीप्रकार सर्वगतनय और असर्वगतनय, शून्यनय और अशून्यनय, ज्ञानज्ञेय-अद्वैतनय और ज्ञानज्ञेय-द्वैतनय ह्न ये सभी जानने से अर्थात् जानने की प्रक्रिया से ही संबंधित हैं।

आत्मा सर्वगत है अर्थात् सबको जानने का उसका स्वभाव है; धर्म है। सबको जानना आत्मा का विकार नहीं है। पर को जानने का जो यह स्वभाव है, वह दृष्टि के विषय में शामिल है; क्योंकि यह स्वभाव आत्मा का गुण है, धर्म है।

आत्मा में एक असर्वगत नामक धर्म भी है, जिसके कारण आत्मा अपने में से निकलकर कहीं जाता नहीं है।

अशून्यनय के कारण आत्मा सबको जानता है, सभी ज्ञेय आत्मा के जानने में आते हैं अर्थात् आत्मा पर से शून्य नहीं है। शून्यनय के कारण पर को जानते हुए भी पर ने आत्मा में रंचमात्र भी प्रवेश नहीं किया।

जिन्हें ऐसा डर लगता है कि यदि आत्मा पर को जानेगा तो पर आत्मा में प्रविष्ट हो जाएंगे और आत्मा पर में प्रविष्ट हो जाएगा; उनको शून्यनय का स्वरूप समझना चाहिए। कितने ही पर जानने में आवें अथवा यह पर को कितना भी जाने; परन्तु शून्यनय से आत्मा पर से सदा शून्य ही रहेगा।

आत्मा में ज्ञानज्ञेय-द्वैत नामक एक ऐसा धर्म है, जिसके कारण ज्ञान में ज्ञेय आते हैं; लेकिन मिलते नहीं हैं, उनमें द्वैतपना अर्थात् जुदा-जुदापना

बना रहता है। आत्मा में ज्ञानज्ञेय–अद्वैत नामक एक ऐसा धर्म है, जिसके कारण ज्ञेय पूरीतरह जानने में आ जाते हैं अर्थात् एकाकार हो जाते हैं।

ज्ञेय आत्मा में पूरी तरह मिल भी जाते हैं और नहीं भी मिलते हैं ह्न ऐसा आत्मा का अनेकान्तस्वभाव है।

सर्वगतादि नयों के संदर्भ में 'परमभावप्रकाशक नयचक्र' की निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं ह्न ''सर्वगत, असर्वगत, शून्य एवं अशून्य नयों के माध्यम से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह भगवान आत्मा ज्ञेयों को जानता तो है; पर उनमें जाता नहीं, उनमें प्रवेश नहीं करता। इसीप्रकार ज्ञेय ज्ञान द्वारा जाने तो जाते हैं, पर वे ज्ञान में प्रविष्ट नहीं होते।

ज्ञान ज्ञान में रहता है और ज्ञेय ज्ञेय में रहते हैं; दोनों के अपने–अपने में सीमित रहने पर भी ज्ञान द्वारा ज्ञेय जाने जाते हैं।

इसी वस्तुस्थिति को ये नय इसप्रकार व्यक्त करते हैं ह्न सब ज्ञेयों को जानने के कारण आत्मा सर्वगत है और ज्ञेयों में न जाने के कारण असर्वगत हैं तथा ज्ञान में ज्ञेयों के अप्रवेश के कारण आत्मा ज्ञेयों से शून्य है, खाली है और ज्ञेयों को जानने के कारण ज्ञेयों से अशून्य है, भरा हुआ है।

इतना जान लेने पर भी यह जिज्ञासा शेष रह जाती है कि ज्ञान में ज्ञात होते हुए ज्ञेय ज्ञान से भिन्न हैं या अभिन्न हैं; वे ज्ञेय ज्ञान से अद्वैत हैं, एकमेक हैं या द्वैत हैं, अनेक हैं ?

इस जिज्ञासा की पूर्ति के लिए यहाँ कहा जा रहा है कि ज्ञानज्ञेय–अद्वैतनय से ज्ञान में झलकते हुए ज्ञेयपदार्थ ज्ञान से अभिन्न हैं, अद्वैत हैं, एक हैं और ज्ञानज्ञेय–द्वैतनय से ज्ञान में झलकते हुए ज्ञेयपदार्थ ज्ञान से भिन्न हैं, द्वैत हैं, अनेक हैं।''

तदनन्तर आचार्य स्वभावनय और अस्वभावनय का स्वरूप इसप्रकार समझाते हैं ह्न

स्वभावनयेनानिशिततीक्ष्णकण्टकवत्संस्कारानर्थक्यकारि। अस्वभावनयेनायस्कारनिशिततीक्ष्णविशिखवत्संस्कारसार्थक्य–कारि। ह्न आत्मद्रव्य, स्वभावनय से, जिसकी किसी के द्वारा नोक नहीं निकाली जाती, ऐसे पैने काँटे की भाँति संस्कारों को निरर्थक करनेवाला है और अस्वभावनय से, जिसकी नोक लुहार के द्वारा संस्कार करके निकाली गई है, ऐसे पैने बाण की भाँति, संस्कार को सार्थक करनेवाला है।''

बहुत लोग ऐसा कहते हैं कि बच्चों में धार्मिक संस्कार डालना है तो आत्मा को संस्कारित किया जा सकता है या नहीं ?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए आचार्यदेव कहते हैं कि आत्मा को संस्कारित किया भी जा सकता है और नहीं भी किया जा सकता है। यह जैनधर्म का अनेकान्त है।

जिसप्रकार काँटे की नोक किसी ने बनाई नहीं है, असंस्कारित है, अकृत्रिम है, काँटे का मूलस्वभाव है; उसीप्रकार भगवान आत्मा का मूलस्वभाव असंस्कारित है, अकृत्रिम है, किसी का बनाया हुआ नहीं है; उसमें किसी भी प्रकार का संस्कार संभव नहीं है। अत: वह भगवान आत्मा स्वभावनय से संस्कारों को निरर्थक करनेवाला कहा गया है।

तथा जिसप्रकार बाण की नोक लुहार द्वारा बनाई गई है; अत: संस्कारित है, कृत्रिम है; उसीप्रकार भगवान आत्मा के पर्यायस्वभाव में संस्कार किया जा सकता है; अत: अस्वभावनय से भगवान आत्मा संस्कारों को सार्थक करनेवाला कहा गया है।

आत्मा में एक धर्म तो ऐसा है कि जिसके कारण उसमें संस्कार नहीं डाले जा सकते और दूसरा धर्म ऐसा है कि जिसके कारण समस्त संस्कारों से वह अप्रभावित रहता है। **'चंदनविष व्यापै नहीं, लिपटे रहत भुजंग'।** इस धर्म का नाम स्वभावधर्म है। आत्मा में एक ऐसा धर्म भी है कि उसे संस्कारित किया जा सकता है। जैसे कहा जाता है –

संगति ही गुण ऊपजे, संगति ही गुण जाय।
बाँस फाँस और मीसरी, एक ही भाव बिकाय।।

इस धर्म का नाम अस्वभावधर्म है तथा आत्मा के इन स्वभावधर्म और अस्वभावधर्म को विषय बनाने वाले नयों को स्वभावनय और अस्वभावनय कहा जाता है।

यदि आत्मा को संस्कारित नहीं किया जा सकता होता तो देशना–लब्धि का कोई मतलब ही नहीं है तथा यदि संस्कार से ही काम होता तो निसर्गज सम्यग्दर्शन होता ही नहीं तथा यदि अन्दर में योग्यता हुए बिना मात्र देशना से ही सम्यग्दर्शन होता तो पत्थर को सम्यग्दर्शन हो जाता; क्योंकि उसे भी देशना सुनने मिल जाती है।

अरे भाई ! जिस कपड़े में स्वभाव से स्वच्छता है, वही कपड़ा साबुन से साफ हो सकता है; संस्कारित किया जा सकता है।

इसप्रकार भगवान आत्मा स्वभावनय से संस्कारों को निरर्थक करने वाला कहा गया है तथा अस्वभावनय से भगवान आत्मा संस्कारों को सार्थक करनेवाला कहा गया है।

इसप्रकार यहाँ ४७ नयों में से कुछ नयों का नमूने के तौर पर स्वरूप स्पष्ट करने का प्रयास किया; किन्तु अभी अनेक ऐसे नय हैं, जिनका स्वरूप समझना आत्मकल्याण की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है; अत: जिज्ञासु पाठकों से मेरा विशेष अनुरोध है कि वे परमभावप्रकाशक नयचक्र के ४७ नयों संबंधी प्रकरण का गहराई से अध्ययन अवश्य करें।

प्रवचनसार में समागत उक्त ४७ नयों के संदर्भ में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के प्रवचनों का संकलन 'नयप्रज्ञापन' का भी स्वाध्याय करना अत्यन्त उपयोगी है।

भगवान अरिहंत की दिव्यध्वनि के सारभूत इस प्रवचनसार ग्रन्थाधिराज में तीन महाधिकारों के माध्यम से यह समझाया गया है कि इस भगवान आत्मा का स्वभाव सबको जानने–देखने का है और सम्पूर्ण जगत का स्वभाव इस भगवान आत्मा के ज्ञान का ज्ञेय बनने का है।

तात्पर्य यह है कि जगत का कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं है जो किसी न किसी के ज्ञान का विषय न बना हो, जाना नहीं गया हो और कोई आत्मा

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

2 फरवरी 2007, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

टोडरमल महाविद्यालय की प्रतियोगिताएँ सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के अन्तर्गत प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा दिनांक 25 दिसम्बर 2006 से 14 जनवरी 2007 तक विभिन्न आध्यात्मिक एवं खेल-कूद प्रतियोगितायें सम्पन्न कराई गयी।

जिसमें **अन्ताक्षरी प्रतियोगिता** में **उपाध्याय वर्ग** से दीपेश जैन अमरमऊ व अभिषेक जोगी गजपंथा ने प्रथम, एकत्व पुजारी खनियांधाना व वीरेन्द्र जैन बक्स्वाहा तथा रजित जैन व दीपक जैन भिण्ड ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन अभय जैन खडैरी व अंकित जैन खनियांधाना ने किया। **शास्त्री वर्ग** से निखिल जैन कोतमा व अभय जैन खडैरी ने प्रथम तथा अंकित जैन लूणदा व शशांक जैन सागर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन सन्मति जैन व विवेक जैन पिड़ावा ने किया।

धर्म श्रेष्ठ या धन विषय पर आयोजित **उपाध्याय वर्ग की वाद-विवाद प्रतियोगिता** में **पक्ष** से प्रकाश उखलकर गोवर्धन ने प्रथम व राहुल जैन नौगाँव ने द्वितीय तथा **विपक्ष** से अभिषेक जोगी गजपंथा ने प्रथम व जयेश जैन उदयपुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन जितेन्द्र जैन मुम्बई व किशोर धोंगड़े रहाटगाँव ने किया।

मोक्षमार्ग निश्चय से है या नहीं विषय पर आयोजित **शास्त्री वर्ग** की **वाद-विवाद प्रतियोगिता** में **पक्ष** से प्रसन्न शेटे कोल्हापुर ने प्रथम व प्रशांत उखलकर गोवर्धन ने द्वितीय तथा **विपक्ष** से कु. परिणति पाटील जयपुर ने प्रथम व गजेन्द्र जैन भिण्डर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन राहुल जैन अलवर ने किया।

काव्यपाठ प्रतियोगिता में प्रथम सचिन जैन गढ़ी व द्वितीय राहुल जैन अलवर रहे। संचालन अर्पित जैन बड़ामलहरा ने किया।

भजन प्रतियोगिता में कु. परिणति जैन जयपुर व विवेक जैन दलपतपुर ने प्रथम तथा सचिन जैन गढ़ी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन निखिल जैन कोतमा ने किया।

श्लोक पाठ प्रतियोगिता में **उपाध्याय** से विवेक जैन दलपतपुर ने प्रथम तथा जी. श्रीकान्त आरणी व अभिषेक जोगी गजपंथा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **शास्त्री** से प्रसन्न शेटे कोल्हापुर व कु.परिणति पाटील जयपुर ने प्रथम तथा प्रशान्त उखलकर गोवर्धन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन प्रवीण पाटील हेरले व किशोर धोंगड़े रहाटगाँव ने किया।

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में **उपाध्याय वर्ग** से जयेश जैन उदयपुर ने प्रथम व अभिषेक जोगी गजपंथा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन धीरज जैन जबेरा ने किया। **शास्त्री वर्ग** से गजेन्द्र जैन भिण्डर ने प्रथम एवं प्रशान्त उखलकर गोवर्धन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संचालन रोहन रोटे बाहुबली (कुंभोज) ने किया।

अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान वी. संतोष चेन्नई व द्वितीय स्थान कु.परिणति पाटील जयपुर ने प्राप्त किया। संचालन कु. अनुप्रेक्षा जैन मुम्बई ने किया।

चित्रकला प्रतियोगिता में प्रकाश उखलकर गोवर्धन ने प्रथम व अतिश जोगी औरंगाबाद ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

शास्त्र सज्जा प्रतियोगिता में **शास्त्री वर्ग** से सतीश बोरालकर डोणगाँव ने प्रथम, राहुल जैन अलवर व किशोर धोंगड़े रहाटगाँव ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **उपाध्याय वर्ग** से आशीष जैन मड़ावरा ने प्रथम व संयम शेटे कोल्हापुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

हम और हमारा विश्व विषयक **निबन्ध प्रतियोगिता** में मोहित जैन नौगाँव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। उक्त दोनों प्रतियोगिताओं का संयोजन सतीश बोरालकर डोणगाँव ने किया।

इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो, बॉलीबॉल, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज, दौड आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन विद्यार्थियों के लिए किया गया।

सभी प्रतियोगिताएँ रोहन रोटे बाहुबली (कुंभोज) व अंकुर जैन रायसेन के मुख्य संयोजकत्व में सम्पन्न हुई। ●

(पृष्ठ 7 का शेष .... प्रवचनसार का सार)

भी ऐसा नहीं है कि उसने किसी को आजतक जाना ही न हो।

उक्त महासत्य के प्रतिपादन के लिए इसके ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन और ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार समर्पित हैं।

उक्त अधिकारों में शुद्धोपयोग-शुभोपयोग, अतीन्द्रियज्ञान-अतीन्द्रियसुख और इन्द्रियज्ञान-इन्द्रियसुख का तथा उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य, महासत्ता-अवान्तरसत्ता, छहों द्रव्यों का स्वरूप आदि बताकर ज्ञान और ज्ञेयों के बीच भेदज्ञान कराने का सफल प्रयास किया गया है।

अन्तिम अधिकार चरणानुयोगसूचक चूलिका में श्रमणों के आचरण का सुन्दरतम विवेचन है।

इसप्रकार यह ग्रन्थाधिराज अपने में वह सबकुछ समेटे है कि जिसका आत्महित के लिए जानना अत्यन्त आवश्यक है। **(समाप्त)**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
फैक्स : (0141) 2704127